॥ श्री श्याम नेत्राष्टक ॥

नीले पर असवार हाथ असि ले, करता सदा त्राण तू।

जो शरणागत 'आर्तदीन' बन, रखता सदा प्राण तू।।

तू ही एक अनन्य आश्रय, महा है आपदा ग्रस्त का।
तू करुणाकर है कृपाकर हे प्रभो, दे दृष्टि 'भाग्येश' को।।

भौमिनन्दन, नन्दनन्दन अहो जयलोक्य नन्दन हैं तू।
नाना नाम, अनेक रूप, गुणयुक्त, संकट निकन्दन हैं तू।।

भक्तों के दुःखकष्ट दूर करने, आता सदा तू दौड़ कर।
आ करुणाकर, कर कृपा वरद हे! दे दृष्टि 'भाग्येश' को।।

तेरी करुणा समस्त जग में है, भक्त जन रक्षिका।
तेरा तेज प्रताप व्याप्त, जग में दे दान तू अक्षिका।।

दे कर के निज शीश, ईश-पदवी पाई है तूने प्रभो।
कर करुणाकर वृष्टि इस स्वजन पर, दे दृष्टि अपने दासको।।

जाऊँ और कहाँ कि छोड़ तुमको, पाऊँ मनोरथ जहाँ।
है सूना संसार एक तुझ बिन, मेरे लिये तो यहाँ।।

आया हूँ दुःख दग्ध युग चरण में, तो रख प्रभो शरण में।
दे अब तो निज ध्यान दुखहरण में, दे दृष्टि अपने दासको।।

नहीं जाने क्या अपराध मम हुआ, जो काण्ड यह हो गया।
छोटा सा शिशु यह अबोध मति का, जो दृष्टि निज खो गया।।

तू जितना अनुदार दण्डनि में, उतना क्षमा में प्रबल।
तू करबद्ध युगल क्षमा जलधि हे! दे दृष्टि अपने दासको।।

तेरा मुख समुख खड़ा ही, ताकता रहता सदा शक्र है।

तेरे इगिंत मन्त्र से, चल संसार का चक्र है॥

सर्जन पालन में तथा प्रलय में, तू शक है सर्वथा।
लीलामय प्रकटा स्वकीय करुणा, दे दृष्टि अपने दासको॥

तेजो धाम महा प्रताप रवि, तू है कोटि सूर्योज्ज्वल।
तारा-ग्रह-नक्षत्र और शशि, सभी में है तेरा ही बल॥

हे श्रीकृष्ण चरण युगार्पित मन, बरचस्व प्राणादिक्।
हे अमित दानी प्रकाश पुंज भगवन, दे दृष्टि अपने दासको॥

हे सूर्योपम शीर्ष मात्र छविमान, हे भक्त वत्सल प्रभो।
हे संसार विभूति ज्योति भवन! हे दीन आश्रय-विभो॥

हे सम दृष्टि दयालू अब विनय सुन हो, दास पर द्रवित तू।
दृष्टि फेर इधर अबोध शिशु पर, दे दृष्टि अपने दासको॥

यह नयनाष्टक भक्तियुक्त चित से, जो दीन होकर पढ़े।
श्यामानुग्रह से सफल हो, सब कष्ट संकट कटे॥

अन्धे और अवोध दीन शिशु को, है दृष्टि इससे मिली।
कहता 'नाथूराम' विनय यही सृजन से है श्याम करुणा बड़ी॥